रणनीतिक संचार संदर्भ सामग्री - भाग ४

समालोचनात्मक सोच और चिंतन को कैसे अपनाएँ?

VIKAS SAMVAD

लेखन
सचिन कुमार जैन

सह लेखन और संपादन
पूजा सिंह, राकेश कुमार मालवीय, विश्वंभर त्रिपाठी,
संदीप नाईक, निधि तिवारी, जावेद अनीस, राजेश भदौरिया,
सत्यम पांडेय, उपासना बेहार, अनिल धीमान,
कार्तिक शर्मा, पिंकी वर्मा

मार्गदर्शन
चिन्मय मिश्र, गुरुशरण सचदेव

> समालोचनात्मक सोच एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम किसी विषय, स्थिति या सिद्घांत को लेकर अपने विचारों में स्पष्टता लाते हैं।

समालोचनात्मक सोच एवं चिंतन तभी संभव है जब हम किसी दिये गये विषय, स्थिति या सिद्घांत के बारे में तथ्यात्मक ढंग से विश्लेषण करें। सामान्य सोच और समालोचनात्मक सोच में एक प्रमुख अंतर यह है कि सामान्य सोच जहां किसी घटना को जस का तस देखती है वहीं समालोचनात्मक सोच उसके मूल में जाकर घटित होने के कारण, प्रक्रिया और उसके व्यापक प्रभाव तक पर विचार करती है।

समालोचनात्मक सोच मुख्य रूप से छः ककारों पर निर्भर रहती हैः क्या, कौन, कब, कहां, कैसे और कौन? किसी घटना के बारे में अगर ये सवाल बार–बार और गंभीरता से पूछे जाएंगे तो हम समालोचनात्मक सोच आधारित निष्कर्ष हासिल कर सकेंगे। समालोचनात्मक सोच हासिल करने की प्रक्रिया का एक प्रमुख हिस्सा यह है कि हम निरंतर जानकारियां जुटाते रहें, सीखते रहें, स्वयं से प्रश्न करते रहें, स्वयं का मूल्यांकन करते रहें और प्रशिक्षण लेते रहें। समालोचनात्मक सोच से जुड़े कई लाभ हैंः यह हमें विश्लेषणपरक बनाती है, इससे हमारी दृष्टि साफ होती है और मानसिक खुलापन आता है, संस्था में प्रक्रियागत मजबूती आती है और हम समाधन की ओर बढ़ते हैं।

समालोचनात्मक सोच और चिंतन को कैसे अपनाएँ?

समालोचनात्मक सोच और चिंतन का मतलब

समालोचनात्मक सोच या चिंतन एक कौशल आधारित प्रक्रिया है, जिसमें हम किसी भी विषय, स्थिति, शब्द या सिद्धांत के बारे में अपनी समझ में स्पष्टता लाते हैं, उसके विभिन्न पहलुओं के बारे में गहराई से तथ्यात्मक और पारिस्थितिकीय विश्लेषण करते हैं, इस विश्लेषण में तथ्यों के साथ साथ मूल्य/उसूल भी मायने रखते हैं। उसके छुए-अनछुए पक्षों के बारे में जानते हैं, उनका मूल्यांकन करते हैं और इस तरह हासिल की गई जानकारियों के आधार पर ही निर्णय लेते हैं या उस विषय से सम्बंधित किसी पक्ष को स्वीकार करते हैं।

समालोचनात्मक सोच और चिंतन के उदाहरण

डॉक्टर

जब आप डाक्टर के पास जाते हैं, तब वह संयम से आपकी बात सुनता है। आपकी समस्या के बारे में जानने की कोशिश करता है। वह शरीर के उस हिस्से का पहले अपनी नजर से, फिर हाथों से और फिर मशीन से परीक्षण करता है।

वह आपसे जीवन शैली के बारे में पूछता है। आपका काम बैठे-बैठे करने वाला है या शारीरिक मेहनत वाला है? तात्कालिक प्रश्न पूछता है कि भोजन में क्या खाया था?

उसकी रूचि यह जानने में भी होती है कि क्या आपके परिवार में या पहले की पीढ़ियों में किसी को रक्तचाप या डायबिटीज की समस्या रही है? आप कह सकते हैं कि समस्या तो मुझे है, डॉक्टर मेरे माता-पिता या पीढ़ियों के बारे में क्यों जानना चाहता है। वह इसलिए यह जानना चाहता है क्योंकि उसे यह समझना होगा कि आपकी बीमारी अभी पैदा हुई है या अनुवांशिक है। यह जानकर ही वह उपचार की दिशा तय कर पाता है।

डॉक्टर उपचार का विशेषज्ञ होता है, लेकिन वह तब तक आपका उपचार नहीं कर सकता है, जब तक कि वह आपके बारे में पूरी जानकारी हासिल न कर ले और उस जानकारी का खुद विश्लेषण न कर ले।

वास्तव में डाक्टर समालोचनात्मक सोच और चिंतन की तकनीक का इस्तेमाल करता है।

यात्रा

विनोद को हवाई अड्डे तक ले जाने के लिए टैक्सी आई। उस दिन बहुत देर हो गयी थी। शाम के 4.25 बज रहे थे और विनोद को किसी भी स्थिति में 5.15 बजे तक हवाई अड्डे तक पहुंचना था। आमतौर पर विनोद के घर से 65 मिनिट लग जाते हैं हवाई अड्डे तक पहुंचने में। विनोद ने टैक्सी चालक से कहा – भाई सवा पांच बजे तक पहुंचना है।

विनोद के इस आग्रह पर टैक्सी चालक का पहला उत्तर हो सकता था – नहीं, इतनी जल्दी तो नहीं पहुँच पाएंगे। ट्रैफिक का समय है।

लेकिन दूसरा उत्तर समालोचनात्मक चिंतन से उभरता है। टैक्सी चालक ने कुछ बिन्दुओं पर विचार करना शुरू किया – यह वक्त ट्रैफिक का है। अगर मुझे सवा पांच बजे तक पहुंचना है तो कौन सा रास्ता लेना चाहिए, जहां ट्रैफिक न हो। अधिकतम कितनी स्पीड रखी जा सकती है, ताकि सुरक्षा रहे। कहीं ऐसा तो नहीं, उस रास्ते पर भी ट्रैफिक हो? तब उसने निर्णय लिया कि एक रास्ता है, जो दो किलोमीटर ज्यादा लंबा है, लेकिन वहां ज्यादा गति रखी जा सकती है। उस रास्ते से 20 मिनिट बचाए जा सकते हैं। टैक्सी चलाते समय उसने ध्यान रखा कि वाहन की गति औसतन 40 किलोमीटर प्रतिघंटे बनी रहे।

टैक्सी चालक ने समालोचनात्मक सोच का ही तो इस्तेमाल किया!

सामाजिक नागरिक संस्था का कार्यक्रम

एक संस्था चाहती थी कि वह ऐसा कार्यक्रम संचालित करे, जिससे छोटे किसानों की आय अगले तीन सालों में 25 हजार रुपए से बढ़कर 50 हजार रुपए हो जाए। इसके लिए संस्था ने यह सोचना शुरू किया कि यह लक्ष्य कैसे हासिल किया जा सकता है?

पहला प्रश्न यह उठा कि इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए योजना अकेले संस्था के द्वारा बनाई जाएगी या समुदाय/किसान खुद समाधान बता सकते हैं? संस्था के कार्यकर्ताओं ने किसानों की बात सुनना शुरू की। संस्था का यह मूल्य था कि समस्या का विश्लेषण खुद लोगों को ही करना चाहिए। तब एक साझा अध्ययन की प्रक्रिया शुरू हुई।

सबसे पहले उसने कार्यक्रम के लक्षित क्षेत्र में किसानों के पास उपलब्ध संसाधनों, उन संसाधनों के उपयोग के तरीके का अध्ययन किया ताकि यह पता चल सके कि संसाधनों से क्या अभी जितनी ही आय हो सकती है, या इन्हीं संसाधनों का ज्यादा उत्पादक उपयोग किया जा सकता है? अध्ययन से पता चला कि खुद के बीजों के इस्तेमाल, जैविक खाद और कीट प्रबंधन से कम से कम 25 प्रतिशत उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। तब प्रश्न आया कि इसके लिए कौन सी रणनीति अपनाई जाना चाहिए? और तय किया गया कि वे बेहतर बीजों का इस्तेमाल करें, अपने बीज बचाएं और जैविक खाद का इस्तेमाल करें। इससे लागत कम होगी।

दूसरा प्रश्न था कि छोटे किसान सालभर में कितनी फसल लेते हैं? अध्ययन से पता चला कि वे एक ही फसल लेते हैं। इसका कारण था कि उनके पास सिंचाई की सुविधाएं नहीं थी। तब रणनीति बनी कि इन किसानों के लिए सिंचाई की सुविधाएं विकसित

की जाएंगी। इससे वे दो फसल ले पाएंगे।

अब सवाल यह आया कि अभी सभी किसान गेहूं-चावल ही उगाते हैं। अगर इसी का उत्पादन बढ़ता गया तो क्या विविधता बनी रहेगी? क्या किसानों को उचित लाभदायी कीमतें मिल पाएंगी? तब तय हुआ कि उपज में विविधता लाने के लिए भी प्रयास करने होंगे।

तब यह प्रश्न भी आया कि क्या सभी सुविधाएं संस्था उपलब्ध करवाएगी? इनके लिए पूरा निवेश संस्था करेगी? अगर ऐसा होगा तो क्या समुदाय या किसान इन सुविधाओं को अपना मान पाएंगे? उनका खुद रखरखाव या प्रबंधन करेंगे? क्या उनमें खुद समस्याओं के निराकरण के लिए पहल करने का उत्साह खत्म न हो जाएगा?

इस प्रश्न के संदर्भ में तय हुआ कि पूरे कार्यक्रम की योजना और उस योजना को लागू करने के लिए जरूरी आर्थिक संसाधनों का आकलन समुदाय के साथ मिलकर ही किया जाएगा। हर काम के लिए सूची बनाई गयी। इसमें बीज, खाद, सौर ऊर्जा, पानी बचाने के लिए संरचनाएं बनाने, मिट्टी के उपचार और बचाव के लिए संरचनाएं, किसानों के प्रशिक्षण, बीजों को संरक्षित करने की व्यवस्थाओं के लिए काम करना तय हुआ।

इन कामों में तीन हिस्सों पर आर्थिक संसाधन की जरूरत पहचानी गयी। सामग्री, श्रम और प्रबंधन-रखरखाव।

जब चर्चा हुई तब पता चला कि छोटे किसानों के पास आर्थिक संसाधन तो नहीं हैं, लेकिन वे अपने पुराने बीज साझा कर सकते हैं। पानी और मिट्टी के काम में श्रम का योगदान करने के लिए तैयार हैं। गांवों में जो वृक्षारोपण किया जाएगा, उनकी देखरेख का काम गाँव के लोग खुद करेंगे। जब पूरी योजना बनी तब पता चला कि संस्था को केवल 52 प्रतिशत योगदान देना था और किसान अलग-अलग रूपों में 30 प्रतिशत योगदान करने की स्थिति में थे। मिलजुलकर हो रही इस कोशिश में चर्चाओं के दौरान पंचायत के प्रतिनिधियों ने भी बताया कि उनके पास भी मिट्टी-पानी के काम के लिए कुछ संसाधन हैं। वे 18 प्रतिशत योगदान के लिए तैयार हो गए। इस तरह यह एक साझा कार्यक्रम बन गया।

जब समालोचनात्मक सोच और चिंतन के साथ योजना बनाई जाती है, तब वह ज्यादा परिणामदायक और स्थाई होती है।

समालोचनात्मक सोच और चिंतन कैसे अपनाएँ?

इंसान का और अन्य कई जीवों का स्वभाव जिज्ञासा का होता है यानी कुछ जानना और जानते रहना। यह जरूरी नहीं है कि हर व्यक्ति कुछ नया खोजे या आविष्कार करे। लेकिन वह जानने की प्रवृत्ति रखता है। जो पहले से खोजा गया है, उसे वह जानना चाहता है। और कुछ लोग जब यह देखते हैं कि अभी भी कुछ ऐसी बातें/तरीके/वस्तुएं ऐसी हैं, जो खोजी या बनाई नहीं गयी हैं, तो वह उनका निर्माण करना चाहता है।

जानने और खोज करने की प्रक्रिया कितनी आगे जा सकती है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति कितना विश्लेषण करता है? किस तरह से विचार करता है?

सामान्य सोच और चिंतन का मतलब है यह जानना कि क्या घट रहा है? या समस्या क्या है? समालोचनात्मक सोच का मतलब है यह जानना कि क्यों घट रहा है? कैसे घट रहा है? कारण कौन है? इसकी व्यापकता क्या है? और इसका समाधान क्या है?

समालोचनात्मक सोच और चिंतन में जानकारी, तथ्यों,

संवाद के विभिन्न माध्यमों, धारणाओं और मिथकों, गहरे अवलोकन और शोध के परिणाम महत्वपूर्ण तत्व होते हैं। अक्सर पहले से चली आ रही सोच, व्यवहार या सिद्धांत को कई लोग ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं करते हैं, वे उसे सबसे पहले विचार और तर्क पर परखते हैं। जब वे इससे संतुष्ट होते हैं, तभी उसे स्वीकार करते हैं।

समालोचनात्मक सोच और चिंतन में केवल परिणाम महत्वपूर्ण नहीं होता है, यह देखना भी जरूरी होता है कि परिणाम की उपयोगिता क्या है? यह नैतिक है या अनैतिक है?

समालोचनात्मक सोच और चिंतन से बेहतर और प्रभावी निर्णय लेने में बहुत मदद मिलती है।

समालोचनात्मक सोच और चिंतन की प्रवृत्ति विकसित करने के लिए सबसे जरूरी है प्रश्नों का होना। हम अपने विषय से सम्बंधित जितने ज्यादा प्रश्न पूछ सकते हैं, हमारी समालोचनात्मक सोच का दायरा उतना ही व्यापक होगा।

यह तकनीक छह शब्दों पर टिकी होती है - क्या, क्यों, कब, कहाँ, कैसे और कौन? इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए बार-बार यही पूछा जा सकता है- लेकिन क्यों? लेकिन कैसे?

विषय/समस्या - क्या, क्यों, कब, कहाँ, कैसे, कौन!

कैसे ?

- यह किसी अन्य विषय / समस्या के समान है? कैसे?
- यह कैसे राह में बाधा है? या बेहतर होने से रोकती है?
- यह समाज को कैसे नुकसान पहुंचाती है?
- इसके बारे में सच कैसे जान और जांच सकते हैं?
- पहल कैसे करेंगे?
- पहल स्थिति में कैसे बदलाव लाएगी?
- समुदाय से कैसे जुड़ेंगे?
- अपनी क्षमताएं कैसे बढ़ाएंगे?
- कैसे सुनिश्चित करेंगे कि जिनकी समस्या है, वे ही इसका नेतृत्व भी लें?
- विषय का नीतियों से जुड़ाव कैसे है?

कौन ?

- विषय/समस्या से प्रभावित कौन है?
- क्या प्रभाव नकारात्मक है?
- इस विषय/विषय से सम्बंधित निर्णय कौन लेता है/प्रभावित करता है?
- प्रत्यक्ष रूप से सबसे ज्यादा प्रभावित कौन है?
- क्या इसके बारे में चर्चा होती है?
- विषय/समस्या के बारे में जानकारी लेने के लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति कौन है?
- विषय/समस्या के समाधान के लिए उपयोगी व्यक्ति कौन हैं?
- किसे महत्व देने की जरूरत है?
- किन लोगों की क्षमता बढ़ाने की जरूरत है?
- पहल में सहयोगी व्यक्ति कौन हो सकते हैं?
- पहल में चुनौती कौन बन सकते हैं?

क्या ?

- समस्या के कारण क्या हैं ?
- समुदाय/प्रभावित समूह का नजरिया क्या है ?
- ताकतें और कमजोरियां क्या हैं ?
- अलग तरह का नजरिया क्या है ?
- विकल्प क्या है ?
- विपरीत तर्क क्या होगा ?
- सबसे बेहतर स्थिति क्या हो सकती है ?
- सबसे खराब स्थिति क्या हो सकती है ?
- सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण क्या है ?
- सबसे कम महत्वपूर्ण क्या है ?
- सकारात्मक बदलाव लाने के लिए क्या कर सकते हैं ?
- पहल में बाधाएं/चुनौतियां क्या हैं ?
- जरूरतें क्या हैं ?
- समाज के व्यवहार से विषय/समस्या का क्या जुड़ाव है ?
- समाज की संस्कृति से विषय/समस्या का क्या जुड़ाव है ?
- नीतियों से विषय/समस्या का क्या जुड़ाव है ?

कहाँ ?

- समाज / समुदाय में हम समस्या / विषय कहाँ देखते हैं ?
- इस तरह की स्थितियां और कहाँ हैं ?
- कहाँ सबसे पहले पहल करने की जरूरत है ?
- हमें सूचनाएं / जानकारियां कहाँ–कहाँ से मिल सकती हैं ?
- कहाँ–कहाँ से सहयोग मिल सकता है ?
- हमने जो विकल्प / योजना सोची है, वह कहाँ ले जाएगी ?
- सुधार / बेहतर होने के क्षेत्र ?

कब ?

- यह स्थिति कब स्वीकार्य / अस्वीकार्य है ?
- समाज को इससे फायदा कब होगा ?
- यह कब समस्या खड़ी करेगा ?
- पहल / कार्यवाही / समीक्षा करने का सही वक्त कब है ?
- कब यह जान पाएंगे कि वे सफल हुए हैं ?
- यह इतिहास में कब शामिल होगा ?
- हमें कब सहायता मांगनीचाहिए ?

क्यों ?

- यह समस्या / चुनौती क्यों है ?
- यह हम / मुझसे सम्बंधित क्यों है ?
- यह सबसे अच्छी या सबसे खराब स्थिति/ समस्या क्यों है ?
- लोग / समाज इससे प्रभावित क्यों है ?
- लोगों को इस विषय / समस्या के बारे में क्यों जानना चाहिए ?
- यह समस्या इतने लम्बे समय से क्यों बनी रही है ?
- हमने इसे होने क्यों दिया ?
- इस पर आज पहल करने की जरूरत क्यों है ?

समालोचनात्मक सोच और चिंतन के मुख्य तत्व

उपलब्ध ज्ञान को चुनौती

हमारे भीतर अपनी जानकारी और ज्ञान पर सवाल की चुनौती का सामना करने की क्षमता होना बहुत जरूरी है। हम समालोचनात्मक सोच और चिंतन की तकनीक को तभी अपना सकते हैं, जब हम यह मान लें कि नया जानने के लिए कुछ तो है ? हमें अभी और जानना है।

- जानते रहना
- अध्ययन, और पढ़ना
- सीखने के नजरिये से सहभागिता
- प्रशिक्षण
- स्वयं से सवाल करना
- स्वयं की समीक्षा करना
- स्वयं का मूल्यांकन करना

विश्लेषण

विश्लेषण किसी भी विषय या समस्या के परीक्षण की क्षमता प्रदान करता है। हमें जो भी सूचना मिलती हैं, हम उसके बारे में विचार करते हैं कि इसका मतलब क्या है ? इसका प्रभाव क्या है ? ऐसा क्यों हैं ? इसके कारण क्या हैं ? आदि। विश्लेषण के मुख्य पक्ष हैं –

- सही प्रश्न पूछना
- आंकड़ों/तथ्य का मतलब समझना
- नई जानकारी जुटाना
- बिंदु, तथ्य की स्थिति की व्याख्या करना
- निष्कर्ष पर पहुंचना
- प्रमाणों पर सवाल करना
- घटनाओं की दिशा और गति को समझना

संचार

समालोचनात्मक सोच और चिंतन की प्रक्रिया में हमें अपने विचार, जानकारियों, प्रश्नों और निष्कर्षों को साझा करते रहना होता है। संचार और संवाद से ही इस सोच और चिंतन का विस्तार होता है और हम अपने मुकाम तक पहुँचते हैं। बिना संचार और संवाद के सोच और चिंतन में ठहराव आ जाता है। ऐसे में हमारे विचार और जानकारियां सड़ने भी लगते हैं। सामाजिक नागरिक संस्था के रूप में हमें अपने पूरे समूह को समालोचनात्मक सोच और चिंतन की प्रक्रिया और कौशल से जोड़ना चाहिए। केवल एक या दो व्यक्तियों के अपनाने से बात बनती नहीं है। संचार के मुख्य पक्ष हैं –

- ध्यान से सुनना
- आकलन करना
- दूसरे विचारों और लोगों से जुड़ना
- विवरण और स्पष्टीकरण देना
- प्रभावी प्रस्तुतीकरण करना
- टीम में काम करना
- मौखिक संवाद
- लिखित संवाद

रचनात्मकता और नवाचार

समालोचनात्मक सोच और चिंतन में अक्सर रचनात्मकता और नवाचार शामिल होता है। जब हम किसी विषय या स्थिति पर गहराई से विचार करते हैं, सवाल पूछते हैं, जानकारियां जुटाते और उनका विश्लेषण करते हैं, तब हम काम करने के नए तरीके और रणनीतियों को तैयार कर पाते हैं। कई बार ऐसा होता है कि जो काम पहले किया जा चुका होता है, उसे ही नए तरीके से करने से वह ज्यादा प्रभावी परिणाम देता है। इससे हमारे मन में खुलापन भी आता है।

यह भी होता है कि अगर हम अपने विषय को अच्छे से नहीं समझते हैं और हमने उसका गहराई से

विश्लेषण नहीं किया होता है, तो हमें यह भय लगा रहता है कि कहीं हमारी कमजोरी या अज्ञानता सामने न आ जाए। समालोचनात्मक सोच और चिंतन हमें इस भय से मुक्त कर देता है। इसके मुख्य पक्ष हैं –

- प्रयोग करने की इच्छा
- लचीलापन
- स्वीकार्यता
- बुनियादी अवधारणाओं को समझना
- जिज्ञासा
- विविध पक्षों से विषय के जुड़ाव को जानना–समझना
- आपसी सम्बन्धों का विश्लेषण और व्याख्या
- अनुमान लगा पाना
- नवाचार/नए तरीकों की खोज करना

मानसिक खुलापन

जब हम समालोचनात्मक सोच और चिंतन के कौशल को अपना लेते हैं, तब हमारी धारणाएं बनाने की आदत भी छूटती जाती है। यानी हम बिना तथ्यों के काल्पनिक नजरिया नहीं बनाते हैं। हम कल्पनाओं को निष्कर्ष नहीं मानते हैं। इससे हमें तथ्यों की सच्चाई और परिस्थितियों को परखने का सलीका आ जाता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम पूर्वाग्रह से मुक्त होते जाते हैं। इसके मुख्य पक्ष हैं –

- विविधता
- खुलापन
- विनम्रता
- समावेश
- वस्तुनिष्ठता
- अवलोकन
- आत्म विश्लेषण

समाधान केन्द्रित प्रवृत्ति

जब हम वास्तव में विषय और समस्या के विविध पहलुओं को जान लेते हैं, हमें उसके बारे में व्यापक तथ्य हासिल हो जाते हैं, जब हम विश्लेषण करने लगते हैं, तब हम 'समाधान' को खोजने और पहचानने लगते हैं। अगर सामाजिक नागरिक संस्थाएं समालोचनात्मक सोच और चिंतन की तकनीक नहीं अपनाती हैं, तो हर समय केवल समस्या की प्रस्तुति तक ही सीमित रह जाती हैं और अपनी प्रासंगिकता खो देती हैं। इसके मुख्य पक्ष हैं –

- विवरण के प्रति सचेत और सजग रहना
- स्पष्टीकरण होना
- तथ्यात्मक और सुविचारित निर्णय लेना
- मूल्यांकन
- वास्तविकता के करीब होना
- स्वरूप को पहचान पाना
- नवाचार करना

प्रक्रियागत मजबूती

जब समालोचनात्मक सोच और चिंतन को अपनाया जाता है,तब संस्था की व्यवस्था, प्रक्रिया, काम करने के तौर तरीके और उसके कामों के परिणाम ज्यादा प्रभावी और उल्लेखनीय होते हैं। टीम को यह स्पष्ट संदेश मिल जाता है कि संस्था की प्रक्रियाएं व्यक्ति केन्द्रित नहीं हैं, बल्कि परिणाम और व्यवस्था केन्द्रित हैं। इसके मुख्य पक्ष हैं –

- अपने विषय के प्रति समझ
- समस्या से जुड़े तर्क
- समाधान से जुड़े तर्क
- तथ्यों के आधार पर रणनीति बनाना
- विषय को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान

- संस्था की जरूरतों की पहचान
- रणनीतिक योजना बनाना
- भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के विश्लेषण की व्यवस्था
- योजना बनाने, निगरानी करने और मूल्यांकन की व्यवस्था
- टीम का आकलन और जरूरी निवेश
- कार्यक्रम की गुणवत्ता और दिशा की समीक्षा

समालोचनात्मक सोच और चिंतन के पहलू

मूल कारणों तक जाना – समालोचनात्मक सोच और चिंतन की प्रक्रिया किसी भी विषय या समस्या के अलग-अलग पहलुओं और उसके मूल कारणों से अवगत कराने का माध्यम होती है।

सम्भावित चुनौतियों को जानना – समालोचनात्मक सोच और चिंतन की प्रक्रिया में जब किसी रणनीति और योजना को अपनाया जाता है, तब उस योजना और रणनीति को लागू करने में आने वाली कठिनाइयों, बाधाओं और चुनौतियों का पहले से अनुमान लग जाता है।

इससे उन बाधाओं से निपटने के लिए पूर्व तैयारी हो पाती है।

परिणामों का आकलन – समालोचनात्मक सोच और चिंतन से विषय के वास्तविक प्रभावों के बारे में ज्यादा सटीक अनुमान लग जाता है। इसके साथ ही किसी समस्या के समाधान के लिए अपनाई जा रही रणनीति के सम्भावित परिणामों का भी अंदाज लग जाता है।

व्यापक पहलुओं और कारणों को समझना – समालोचनात्मक सोच और चिंतन की प्रक्रिया में हम विषय को सीमित दायरे में नहीं समझते हैं। इस प्रक्रिया में यह माना जाता है कि एक विषय या समस्या का किन्हीं दूसरी समस्याओं और विषय के साथ भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्बंध होता है।

अतः इस प्रक्रिया में हम उन सभी विषयों और उनसे सम्बंधों के बारे में चिंतन और विचार करते हैं। अगर ऐसा नहीं किया जाता है तो यह आशंका होती है कि हमारी रणनीति और प्रयास असफल हो जाएं या कोई नकारात्मक परिणाम उत्पन्न कर दें।

स्थापित मान्यता का परीक्षण – यह एक शर्त पर आधारित होती है कि किसी भी विषय या स्थिति या सिद्धांत या समाधान को बिना विचार किए ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। हमें कारणों और विकल्प का खुद समालोचनात्मक परीक्षण करना चाहिए।

जब हम ऐसा करते हैं, तो हम पहले से अपनाए जा रहे सिद्धांतों और समाधानों को ज्यादा परिणाम दायक बना पाते हैं।

व्यवहारों और नजरियों का विश्लेषण – जिस विषय पर हम काम कर रहे हैं, उससे सम्बंधित जो भी व्यवहार या नजरिए उपलब्ध हैं, उनके बारे में जानना और उनका विश्लेषण करना।

यह तरीका हमें विषय के बारे में गहरी समझ बनाने में मदद करता है। जब हम समालोचनात्मक सोच और चिंतन की तकनीक अपनाते हैं, तब पहले से मौजूद ज्ञान और विचारों को अच्छे से समझते हैं।

सजगता – संस्था, संस्था के कार्यक्रम और विषय/समस्या से सम्बंधित आस-पास जो भी घट रहा, जो भी बहस चल रही है, जो भी नई जानकारी आ रही है, नई नीतियाँ आ रही हैं, उनके प्रति सजगता रहना बहुत महत्वपूर्ण तत्व है।

यह सोच त्याग देना होगा कि हमने जो जान लिया है, वही अंतिम जानकारी है।

समालोचनात्मक सोच और चिंतन की प्रक्रिया

अवलोकन

एक महिला समूह ने पहल करते हुए सरकार की योजना में मिलने वाले अधिकार की मांग की और प्रशासन को एकजुट होकर अपना ज्ञापन दिया। वे केवल कागज जमा करवाकर ही सरकार के दफ्तर से वापस नहीं आ गईं, बल्कि उन्होंने वहां खड़े होकर पूरे आत्मविश्वास से अधिकारी से यह बात की कि वे किन कारणों से सरकार की योजना के अधिकारों को पाने के लिए पात्र हैं? जब उनकी बात पूरी नहीं सुनी गई, तो उन्होंने आयोग में अपना आवेदन जमा करवा दिया। जांच शुरू हो गई और उन्होंने पूरे आत्मविश्वास और तथ्यों के साथ अपना पक्ष आयोग के सामने रखा। अंततः उन्हें योजना के तहत अधिकार मिल गए। हम इस प्रक्रिया को देखते रहे। हमें अवलोकन से यह पता चला कि महिलाओं के समूह ने उन्हीं कानूनी प्रक्रियाओं और जानकारियों का उपयोग किया, जो उन्हें सामाजिक नागरिक संस्था द्वारा सहभागी प्रशिक्षण के दौरान दी गई थीं। अवलोकन से हम खुद यह देख पाते हैं कि स्थितियां वास्तव में क्या हैं? पहल का असर क्या है? समस्या के छिपे हुए कारक कौन से हैं? अवलोकन से मिली हुई जानकारी और समझ, हमेशा हमारी बातचीत को अर्थ प्रदान करती है।

तहकीकात / पड़ताल / खोजबीन की आदत

समस्या क्या है? समस्या क्यों है? समस्या का कारण क्या है? समस्या का कारण यही क्यों है? अगर ऐसा हुआ तो क्यों हुआ? ऐसा किसने किया? ऐसा उसने किया, यह कैसे कहा जा सकता है? समस्या का समाधान क्या है? ऐसे ही समस्या कैसे हल होगी? यही समाधान क्यों है? इस समाधान में किसकी भूमिका महत्वपूर्ण है? यह भूमिका महत्वपूर्ण क्यों है? अगर समाधान के बारे में पता है, तो अब तक समस्या हल क्यों नहीं हुई?....कुल मिलाकर हमें जानते रहना है और जो हम जान रहे हैं, उसका ही विश्लेषण करना है। हमारी सोच और योजना का ज्यादातर हिस्सा इसी तहकीकात या विषय की जांच-पड़ताल से ही बन जाता है।

विषय के बारे में स्पष्टता

अपने विषय के बारे में स्पष्ट समझ बनाना सबसे बुनियादी चरण है। हमें यह पता होना चाहिए कि हम वास्तव में किस समस्या का हल खोजने की कोशिश कर रहे हैं या किस लक्ष्य को हासिल करने के लिए कार्यक्रम संचालित कर रहे हैं। बेहतर होगा की हम अपने विषय या समस्या को 6-8 वाक्यों में प्रस्तुत कर पाएं। इनमें से हर एक वाक्य का अर्थ स्पष्ट होना चाहिए।

विषय को जानना

सामाजिक नागरिक संस्था के रूप में हमने जिस विषय या समस्या को चुना है, उसके बारे में अच्छे से अध्ययन किया जाना चाहिए। यह जानना जरूरी होता है कि विषय या समस्या से सम्बंधित कौन से सिद्धांत प्रचलित हैं? अब तक के शोध और अध्ययन क्या निष्कर्ष देते हैं? इससे सम्बंधित वैज्ञानिक जानकारियां क्या हैं? इसे सम्बंधित स्थानीय और राष्ट्रीय नीतियाँ क्या हैं? प्रचलित सिद्धांतों, शोध और नीतियों का संदर्भ और पृष्ठभूमि क्या रही है यानी किन समुदायों, राज्यों और परिस्थितियों में इन्हें बनाया गया है?

विषय से संबंधित प्रश्न तैयार करना

जब हम विषय या समस्या का गहराई से अध्ययन करते हैं, तब हमारे सामने प्रश्न खड़े होते हैं। मसलन यह सिद्धांत तो शहरी क्षेत्र में किए गए प्रयोग के आधार पर बना है। आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्र में तो यह परिस्थिति नहीं है। अतः वहां के लिए उनका सिद्धांत क्या होगा? यह प्रयोग ऐसे क्षेत्र में किया गया है, जहां समाज पर सामंतवादी सोच का गहरा प्रभाव है। अगर हमें यह प्रयोग महानगर में करना होगा, तो रणनीति क्या होगी? क्या पोषण सुरक्षा के स्थिति बिना जातिवादी व्यवहार को खत्म किए हासिल की जा सकेगी? अगर सभी महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हासिल नहीं होगी, तो क्या कुपोषण की समस्या को हल किया जा सकता है? प्रश्न हमें सोचने के लिए मजबूर करते हैं और इससे ही हमें ज्यादा प्रभावी उत्तर खोजने की प्रेरणा मिलती है। जितने ज्यादा प्रश्न पूछे जाएंगे, हमारी रणनीति उतनी ही ज्यादा प्रभावी होगी। हमें यह याद रखना होगा कि उनके विषय, उसके कारणों, समस्या, उससे उबरने की रणनीति या अनुभवों के बारे में लोग जानने की कोशिश करते हैं और इसीलिए सवाल पूछते हैं। यह एक सकारात्मक स्थिति होती है। बेहतर होगा कि हर सवाल को हम अपने विश्लेषण का हिस्सा बनाते जाएं। कोई भी सवाल हो, उसे खारिज न करें।

एक विषय का दूसरे विषय से संबंध

जीवन की कोई भी घटना या समस्या किसी एक विषय या एक कारक तक ही सीमित नहीं रहती है। कुपोषण की समस्या का जुड़ाव सामाजिक व्यवस्था और खानपान के व्यवहार से है। इसका जुड़ाव खेती से भी है, खेती का जुड़ाव गरीबी से भी है और जलवायु परिवर्तन से भी। ऐसे में हमें विषय की भुजाओं को समझना होगा, तभी एक परिणामदायक कार्यक्रम तैयार हो सकता है।

विषय सुझावों को जुटाना

हमने जो जाना है, उसके आधार पर सीधे ही कोई रणनीति नहीं बन जाती है। हमने जो जाना-समझा है, हम उस ज्ञान और जानकारी को लेकर समुदाय, विशेषज्ञों, जानकारों और अन्य अनुभवी संस्थाओं से संवाद करते हैं। अपनी जानकारी को उनसे साझा करते हैं ताकि उनसे 'सुझाव' ले सकें। ऐसा करने से हमें अक्सर प्रभावी रणनीतियां बनाने में मदद मिलती है। समालोचनात्मक सोच और चिंतन का यह व्यावहारिक सिद्धांत है कि हमने जो जाना-समझा है, उसका भी परीक्षण करना चाहिए।

तर्क करना

अगर अपने आप को दबाया न जाए, तो हम पाते हैं कि हमारा दिमाग सवाल पूछता है। मन में शंकाएं भी होती हैं जो भी योजना बना रहे हैं या रणनीति तैयार कर रहे हैं, उसे मजबूत बनाने के लिए 'तर्कों' के औजार का इस्तेमाल करना चाहिए।

परीक्षण करना

विषय/समस्या के बारे में अपने नजरिये और समझ को पत्थर की लकीर नहीं मान लिया जाना चाहिए। हमेशा अपनी समझ और नजरिये का परीक्षण करते रहना सबसे बेहतर आदत होती है। इससे हमें नए सिद्धांतों और नई जानकारियों के बारे में पता चलता रहता है।